पुणे में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन कांफ्रेंस में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, पुणे के वार्षिक समारोह में उपस्थित होकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

अग्रसेन महाराज के विचारों, उनके द्वारा दिए गए संस्कारों में जन्मे सभी अग्रबंधु, माता और बहनों को मैं शुभकामनाएं देता हूं। आज इस वार्षिक अधिवेशन के अंदर कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर, समाज के सामाजिक, आर्थिक बदलाव के लिए अग्रसेन महाराज जी के द्वारा दिए गए संस्कार, सब की सेवा, समर्पण, त्याग की भावना से सभी समाजों के लोगों के जीवन में सामाजिक परिवर्तन करने के लिए आप दो दिन तक लम्बी चर्चा व संवाद करेंगे। आप कुछ विषयों पर निर्णय लेंगे, संकल्प लेंगे और जिस तरीके से हमने जो संकल्प लिए हैं, उन संकल्पों को पूरा करने के लिए संपूर्ण समाज संगठित होकर काम करें। पुणे की यह धरती बड़ी ऐतिहासिक धरती है। महाराजा छत्रपति शिवाजी की धरती है। इस धरती का इतिहास, स्वतंत्रता सेनानियों, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, वीर सावरकर, महादेव गोविंद रानाडे, गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा फूले जैसे तमाम लोगों की धरती है, जिन्होंने आज़ादी के पहले भी एक लम्बा आंदोलन किया, आंदोलन के लिए समाज को प्रेरणा दी और उसके बाद देश में उनके विचारों से आर्थिक, सामाजिक सुधार में नई दिशा बनी।

पुणे शहर देश का वह शहर है, जहां देश भर से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते हैं, संस्कार प्राप्त करने आते हैं, चाहे तकनीकी शिक्षा हो, चाहे उच्च शिक्षा हो, चाहे स्कूली शिक्षा हो, चाहे लॉ की शिक्षा हो, औद्योगिक रूप से भी इस शहर की अपनी एक पहचान है। इसलिए अग्रवाल समाज की एक बड़ी जिम्मेदारी बन जाती है। पुणे के अंदर, महाराष्ट्र के अंदर हमारे पूर्वजों ने भी इसी तरीके से शिक्षा, चिकित्सा जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रकल्पों पर बहुत कार्य किये। महाराजा अग्रसेन जी ने, एक ऐसा शासन चलाया, जो उस समय की परिस्थितियों से अलग था, जहां न हिंसा थी और न युद्ध था। जहां

पर राज्य में आने वाले हर व्यक्ति को एक रुपया एक ईंट मतलब निर्माण भी करें, बाहर से आने वाले व्यक्ति को व्यापार के लिए सहयोग भी करे। अच्छे संस्कार हो, सामूहिकता के साथ शासन पद्धति चले, लोकतंत्र के माध्यम से शासन की पद्धति चले, जनता के परोपकार के लिए, उनके कल्याण के लिए शासन चले, उस समय उनका ऐसा विचार था। आज 5 हजार वर्ष बाद भी हम अगर भगवान अग्रसेन जी के विचारों को पढ़ते हैं, उनके सिद्धांतों को समझते हैं, उनके द्वारा दी गई शासन पद्धति को समझते हैं, तो हमें भी उसी तरीके के शासन, प्रशासन और जनता के नुमाइंदों की तरह काम करने की आवश्यकता है। इसलिए उनके इस बदलाव के कारण उस समय के अंदर एक नई दिशा देने का काम उन्होंने किया।

उसी कारण से, राजाओं के राज के बाद जब अँग्रेजों का शासन आया तो अँग्रेजों के शासन के अन्दर भी आज़ादी की लड़ाई में अग्रवाल समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा। आज़ादी की लड़ाई लड़ने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को आप देखेंगे, कितने स्वतंत्रता सेनानी हुए, जो समाज में व्यापार करते थे, उद्योग करते थे, सामाजिक सेवा में काम करते थे, लेकिन उन्होंने उस अँग्रेजी हुकूमत के खिलाफ एक जनांदोलन शुरू किया, अँग्रेजों के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ी, और लड़ाई लड़ने वाले जो नायक थे, उन नायकों को धन से, मन से सहयोग किया और जनता के साथ सहयोग करने की भावना के साथ काम किया। आप कल्पना कर सकते हैं कि अँग्रेजी हुकूमत के खिलाफ क्या कोई व्यापारी जनांदोलन में खड़ा हो सकता था? लेकिन, उस समय जब किसी को पता नहीं था कि अँग्रेजों का शासन जाएगा या नहीं जाएगा, तब व्यापारी, उद्योगपति भी आज़ादी के लिए आंदोलन करने वालों के साथ खड़े रहे और खुद भी आज़ादी के आंदोलन की लड़ाई भी लड़ी। इसलिए, इस समाज में अग्रवाल समाज का एक बहुत बड़ा योगदान है।

आज़ादी के बाद देश के अन्दर सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के अन्दर अग्रवाल समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है। आप हिन्दुस्तान के किसी गांव या ढाणी में चले जाएं। अगर दस घर भी होंगे

तो आपको अग्रवाल धर्मशाला मिलेगी, विद्यालय मिलेंगे, चिकित्सा केन्द्र मिलेंगे, कोई अन्न भंडार चलाएगा, कोई प्याऊ चलाएगा। उस समय धर्मशाला बनाने का मकसद यही था कि जब कोई राहगीर गांव में आता था, तो वह रात को कहां ठहरेगा, तो उसके लिए धर्मशाला हुआ करती थी क्योंकि सरकार के पास इतना धन नहीं था, इसलिए समाज में कुछ लोगों ने मिलकर शिक्षा के मन्दिर चलाए, महाविद्यालय चलाए। बिना सरकार के सहयोग के शिक्षा का एक मन्दिर चलाकर उस समय शिक्षा देना, शिक्षा से जीवन को परिवर्तित करना और शिक्षा के माध्यम से आज़ादी के आंदोलन की लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरणा देना, यह काम भी अग्रवाल समाज ने किया। इसके लिए उनका योगदान हमेशा याद रहेगा।

अग्रवाल समाज का हमेशा जो विचार था कि उद्योग, व्यापार करना, अस्पताल खोलना, वह आज भी, 71 सालों के इस लोकतंत्र की यात्रा के बाद भी जारी है। दिल्ली में मुझे कई लोग मिलते हैं, जो यह कहते हैं कि हम 400 बेड्स का कैन्सर हॉस्पिटल बना रहे हैं, 400 बेड्स के भवन बना रहे हैं, विद्यालय बना रहे हैं, महाविद्यालय बना रहे हैं, और आज़ादी के 75 सालों के बाद भी उनमें वही विचार और वही संस्कार हैं कि गरीब से गरीब व्यक्ति का इलाज कैसे किया जा सकता है, उसके लिए वे कैन्सर हॉस्पिटल बनाने का काम करते हैं। इस समाज से जो धन कमाया है, उसको समाज को समर्पित करना, समाज को देना, अगर यह विचार कहीं आए हैं तो वह अग्रसेन महाराज जी की कृपा से आए हैं।

केवल उद्योग, व्यापार वे खुद नहीं चलाते हैं, बल्कि उद्योग, व्यापार में लोगों को रोजगार देते हैं। रोजगार के संकट का समाधान करना, उसके संकट को कम करने में अगर कहीं किसी का योगदान है, तो उसमें अग्रवाल समाज का बहुत बड़ा योगदान है। अगर कोई इंडस्ट्री चलाता है तो वहां 1000 लोग काम करते हैं, 2000 लोग काम करते हैं, 100-200 व्यापारी हैं तो जैसे उन्होंने कहा कि किराने की दुकान में 5 आदमी काम करते हैं। जहां कहीं भी रोजगार देकर इस भारत के 75 वर्ष की लोकतंत्र की

यात्रा के अन्दर आर्थिक तंत्र को सशक्त और मजबूत करने में अग्रवाल समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है। आज हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि दुनिया में सबसे ज्यादा तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था, दुनिया के अन्दर सबसे बढ़िया आर्थिक डेस्टिनेशन के रूप में भारत देश है।

हमारे प्रधान मंत्री जी की नयी सोच, नए विचार, नया चिंतन, हमारे नौजवानों के लिए स्टार्ट-अप से काम करने के लिए नई योजनाएं, नए रिसर्च, नए इन्नावेशन, नए स्टार्ट-अप्स, ऐसे बहुत सारी योजनाएं चलाकर किस तरीके से हम दुनिया के विकसित राष्ट्रों से भी आगे बढ़ें, इसके लिए सरकार ने एक व्यापक कार्य-योजना नेटवर्क बनाया है और उस व्यापक कार्य योजना नेटवर्क में आप सबका बहुत बड़ा योगदान है। हमें विकसित भारत बनाना है। विकसित भारत बनाने का सपना कब पूरा होगा? जैसे आज़ादी की लड़ाई लड़ने वालों ने सपना देखा था कि हम आज़ादी प्राप्त करेंगे, इसी तरह आज़ादी के 75 सालों के बाद अब इस पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि हमारी विरासत ने जो संस्कृति, संस्कार दिए हैं, जिस आत्मविश्वास और जिस लक्ष्य के साथ काम किया, हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपनी आँखों के सामने भारत को विकसित राष्ट्र बनाएं, दुनिया का सबसे अग्रिम पंक्ति का देश बनाएं, यह हम सबकी जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी को हमें पूरा करना है। हम समाज को संगठित किसलिए करते हैं? सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाने के लिए, उनके आर्थिक जीवन में परिवर्तन लाने के लिए हम समाज को संगठित करते हैं। यह मानकर चलना चाहिए कि हम भगवान अग्रसेन की संतान हैं तो हमारा यही संस्कार है कि जो कुछ भी समाज का है, वह हमें करना है, यह हमारा लक्ष्य है। हम ही परिवर्तन करेंगे। हम आर्थिक रूप से भी भारत को सशक्त, मजबूत बनाने का काम करेंगे, सामाजिक जीवन में परिवर्तन करने का काम करेंगे और जो कुछ भी सामाजिक बुराइयां हैं, उन बुराइयों को समाप्त करने का नेतृत्व भी अग्रवाल समाज करेगा। इसलिए, आपने 15 सिद्धांतों पर विचार बनाया है। उससे दूसरे समाज में भी विचार जाएगा कि अग्रवाल समाज ने कुछ लक्ष्य बनाकर, कुछ संकल्प बनाकर काम किया है, हमें भी

इन लक्ष्यों की ओर काम करना चाहिए, तो निश्चित रूप से समाज को दिशा देना, उनको प्रेरणा देना, अग्रवाल समाज की जिम्मेदारी है और हमें उसे निभाना चाहिए।

हमारी विरासत को हमें संरक्षित रखना, हमारी विरासत को आगे बढ़ाना है। हमारी एक अच्छी विरासत रही है, अच्छी संस्कृति रही है, अच्छे संस्कार हैं। उस अच्छी संस्कृति, अच्छे संस्कार, और उसकी विरासत को ले जाने की जिम्मेदारी हमारी है, यही हमारा संकल्प है। इस दो दिनों के अधिवेशन में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में और आर्थिक-सामाजिक जीवन में परिवर्तन करने में अग्रवाल समाज का क्या योगदान हो सकता है, इसके लिए हम मंथन और विचार करेंगे। लोकतंत्र हमारी पद्धति है, हमारी जीवन शैली है। यह हमारी प्राचीनतम कार्य शैली है। चर्चा करना, संवाद करना और उसके बाद सामूहिक निर्णय करके उस संकल्प को पूरा करना है।